Toppersnotes
Unleash the topper in you

ग्राम सेवक

ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत सचिव
एवं छात्रावास अधीक्षक ग्रेड - II

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग - 1

हिंदी एवं अंग्रेजी

SIERRA INNOVATIONS

विषय सूची

1. अव्यय	1
2. तत्सम-तद्भव	3
3. शब्द युग्म	5
4. वर्तनी शुद्धि	14
5. विलोम शब्द	16
6. पर्यायवाची	22
7. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	33
8. मुहावरे	38
9. लोकोक्ति	49
10. संज्ञा	62
11. सर्वनाम	66
12. क्रिया	68
13. काल	69
14. कारक	71
15. लिंग	80
16. वचन	83
17. विराम चिन्ह व उनके प्रयोग	88
18. उपसर्ग	94
19. प्रत्यय	98
20. संधि	103
21. समास	109
22. वाक्य रचना	113
23. वाक्य शुद्धि	117
24. रचना व रचनाकार	127

CONTENT

1.	**Parts of Speech**	
	• **Noun**	135
	• **Pronoun**	141
	• **Adjective**	145
	• **Verb**	151
	• **Adverb**	156
	• **Preposition**	161
	• **Conjunction**	169
2.	**Clauses**	173
3.	**Articles**	179
4.	**Time & Tense**	185
5.	**Subject Verb Agreement**	191
6.	**Transformation of Sentences**	196
7.	**Hindi to English Translation**	202
8.	**Voice**	204
9.	**Narration**	210
10.	**Vocabulary**	
	• **Synonyms & Antonyms**	217

• **One Word Substitution**	230
• **Idioms**	242
• **Word With Hindi Meaning (Administrative Word)**	251

Toppersnotes
Unleash the topper in you

अव्यय

अव्यय प्रायः लिंग, वचन, परसर्ग आदि से अप्रभावित रहते हैं । ऐसे शब्द प्रत्येक स्थिति में अपने मूल रूप में बने रहते हैं । नीचे लिखे उदाहरणों को देखें–

1. आज लडकों ने सूर्यग्रहण का रहस्य जान लिया ।
2. आज लडकियों ने अपनी कक्षाओं में कमाल कर दिया ।
3. आज कुछ कृषि वैज्ञानिक आए ।

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित पद 'आज' अव्यय हैं ।

अव्यय शब्दों में विकार (परिवर्तन) न होने के कारण ही ये 'अविकारी' के नाम से भी जाने जाते हैं । ये चार प्रकार के होते हैं–

1. क्रियाविशेषण

'' वह शब्द, जो क्रिया की विशेषता, समय, स्थान, रीति (शैली) और परिमाण (मात्रा) बताए, 'क्रियाविशेषण' (Adverb) कहलाता है ।'' जैसे

वह परसों जाएगा । (समयसूचक)
वह घोडा बहुत तेज दौडता है । (रीति)

अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण के चार प्रकार होते हैं–

1. कालवाचक : इससे क्रिया के समय का बोध होता है । आज, कल, जब, तब, अब, कब, लगातार, दिनभर, प्रतिदिन, परसों, सबेरे, तुरंत, अभी, पहले, पीछे, सदा, बार-बार, बहुधा, प्रायः आदि कालवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं । इन्हीं कालवाचक शब्दों में कुछ का दो बार एक साथ प्रयोग होता है । जैसे–
   वह बार-बार चीखता है ।
   मैं अभी-अभी आया हूँ ।
2. स्थानवाचक : यह क्रिया के स्थान का बोधक होता है । इसके अंतर्गत यहां, वहां, आगे, पीछे, बराबर, भीतर, ऊपर, नीचे, इधर-उधर, अगल-बगल, चारों ओर, जहां, तहां आदि आते हैं । जैसे–
   वह आगे गया है ।
   वे ऊपर बैठे है ।
   स्थानवाचक क्रिया विशेषण दो प्रकार के होते है :
   (a) स्थितिसूचक : यहां, वहां, जहां, तहां, कहां, आगे, आमने-सामने, ऊपर, पास, निकट, सामने, दूर, प्रत्यक्ष आदि ।
   (b) दिशासूचक : इधर-उधर, किधर, दाएं-बाएं आदि ।
   3.परिमाणवाचक : इससे परिमाण (मात्रा) का बोध होता है यानि यह क्रिया की मात्रा का बोध कराता है । इसके अंतर्गत बहुत, बडा, बिल्कुल, अत्यन्त, अतिशय, कुछ, लगभग, प्रायः किंचित, केवल, यथेष्ट, काफी, थोडा, एक-एक कर आदि आते हैं ।
   4. रीतिवाचक : यह क्रिया की रीति (क्रिया कैसे हो रही है) का बोधक होता है । रीतिवाचक क्रियाविशेषण प्रकार, स्वीकार, विधि, निषेध, निश्चय, अनिश्चय, अवधारणा, प्रयोजन और कारण का बोध कराता है ।
   निश्चयार्थक : बेशक, सचमुच, वस्तुतः, हाँ, अवश्य ...
   अनिश्चयार्थक : प्रायः, कदाचित्, संभवतः.....
   स्वीकारार्थक : हाँ, ठीक, सच, ...
   कारणार्थक : अतः, इसलिए, क्योंकि .....
   निषेधार्थक : न, नहीं मत.....
   आवृत्तिपरक : सरासर, फटाफट, ...
   अवधारक : ही, भी, भर, मात्र, तो .....
   इनके अतिरिक्त धीरे-धीरे, अचानक, यथाशक्ति, यथासंभव, आजीवन, निःसंदेश, सा, तक आदि भी क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं ।

अव्ययीभाव के समस्तपदों का प्रयोग भी क्रिया विशेषण के रूप में होता है । जैसे–

उसने आकण्ठ खाया था ।
वह आजीवन काम करता रहा ।

भाववाचक संज्ञाओं में या विशेषणों में 'पूर्वक' जोडकर भी क्रियाविशेषण बनाया जाता है । जैसे–

वह कुशलतापूर्वक रहता है ।
उसने श्रद्धापूर्वक सत्कार किया ।

प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन प्रकार हैं–

1. साधारण क्रियाविशेषण : यह क्रियाविशेषण किसी उपवाक्य से संबंध नहीं रखता है । जैसे–

हाय, वह अब करे तो क्या करे ।
शीघ्र, जल्दी आ जाना ।

2. संयोजक क्रियाविशेषण : इसका उपवाक्य से संबंध रहता है । जैसे–

जब परिश्रम ही नहीं तो विद्या कहाँ से ?

3. अनुबद्ध क्रियाविशेषण : इस क्रियाविशेषण का प्रयोग निश्चय (अवधारणा) के लिए होता है । जैसे–

मैंने खाया तक नहीं था ।

रूप के अनुसार क्रियाविशेषण के तीन प्रकार हैं :

1. मूल क्रियाविशेषण : जो मूल रूप में होते हैं यानी किसी अन्य शब्दों के मेल से नहीं बनते । जैसे–

मैं ठीक हूँ ।
वह अचानक आ धमका ।
मुझे बहुत दूर जाना है ।

2. यौगिक क्रिया विशेषण : जो किसी दूसरे शब्द या प्रत्यय जुडने से बनते हैं । जैसे–

दिन + भर = दिनभर
चुपके + से = चुपके से
वहां + तक = वहां तक
देखते + हुए = देखते हुए

3. स्थानीय क्रियाविशेषण : जो बिना रूपान्तर के किसी विशेष स्थान में आते हैं । जैसे–

लता मंगेशकर अच्छा गाती है । वह बैठकर खा रहा था ।

2. संबंधबोधक

''वे शब्द जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ लगकर उनका वाक्य के अन्य पदो के साथ संबंध सूचित करे ।''

संबंधबोधक (Preposition) शब्द प्रायः संज्ञा या सर्वनाम के बाद लगाए जाते हैं; किन्तु यदा-कदा संज्ञा या सर्वनाम के पहले भी आते हैं ।

प्रयोग के अनुसार ये दो प्रकार के होते हैं :
1. संबद्ध संबंधबोधक : ये संज्ञाओं की विभक्तियों के आगे आते हैं । जैसे–
भूख के मारे
पूजा से पहले
धन के बिना
2. अनुबद्ध संबंधबोधक : ये संज्ञा के विकृत रूप के साथ आते हैं । जैसे–
पुत्रों समेत
सहेलियों सहित
किनारे तक
व्युत्पत्ति के अनुसार भी संबंधबोधक दो प्रकार के होते हैं –
1.मूल संबंधबोधक : बिना, पर्यंत, नाईं, समेत, पूर्वकृ
2.यौगिक संबंधबोधक : वे विभिन्न प्रकार के शब्दों से बनते हैं । जैसे–
और, अपेक्षा, नाम, वास्ते, विशेष, पलटे–संज्ञा से
ऐसा, जैसा, जवानी, सरीखे, तुल्य–विशेषण से
लिए, मारे, करके,–क्रिया से
ऊपर, बाहर, भीतर, यहां, पास–क्रियाविशेषण से
नोट : ध्यान दें, यदि किसी विभक्ति के बाद क्रियाविशेषण रहे तो वह संबंधबोधक बन जाता है । जैसे–
सेनाएँ आगे बढी । (क्रियाविशेषण)
सेनाएँ युद्धक्षेत्र से आगे बढी । (संबंधबोधक)
मोनू ऊपर बैठा है । (क्रियाविशेषण)
मोनू दीवार के ऊपर बैठा है । (संबंधबोधक)
3. समुच्चयबोधक
''शब्दों, वाक्यांशों, वाक्यों को परस्पर जोडने या अलग करनेवाले अव्ययों को 'समुच्चयबोधक (Conjunction) अव्यय कहते हैं ।'' जैसे–
वह आया और मैं गया ।
यहां 'और' दो वाक्यों को जोड रहा है ।
वह या मैं गया ।
यहां 'या' वह और मैं को अलग करता है ।
समुच्चयबोधक अव्यय के दो भेद हैं–
1.समानाधिकरण समुच्चयबोधक : ये भी चार प्रकार के होते हैं–
(a) संयोजक : ये दो पदों या वाक्यों को जोडते हैं । जैसे–
शालू, आरती, कोमल और मेघा बहुत अच्छी है ।
सूरज उगा और अँधेरा भागा ।
इसके अंतर्गत और, तथा, एवं, व आदि आते हैं ।
(b) विभाजक/विभक्तक : ये दो या अधिक पदों या वाक्यों को जोडकर भी अर्थ को बांट देते यानि अलग कर देते हैं । जैसे–
रणवीर या रणधीर स्कूल जाएगा ।
वह जाएगा या मैं जाऊंगा ।
इसके अंतर्गत अथवा, या, वा, किंवा, कि चाहे, नहीं तो आदि आते हैं ।
(c) विरोधदर्शक : ये वाक्य के द्वारा पहले का निषेध या अपवाद सूचित करते हैं । जैसे–
वह बोला तो था; परन्तु इतना साफ–साफ नहीं ।
इसके अंतर्गत किन्तु, परन्तु, लेकिन, मगर, अगर, वरन्, बल्कि, पर आदि आते हैं ।
(d) परिणामदर्शक : इनसे जाना जाता है कि इनके आगे के वाक्य का अर्थ पिछले वाक्य के अर्थ का फल है । जैसे–
सूरज उगा इसलिए अँधेरा भागा ।
2. स्वरूपवाचक : इसके द्वारा जुडे हुए शब्दों या वाक्यों में से पहले शब्द या वाक्य का स्पष्टीकरण पिछले शब्द या वाक्य से जाना जाता है । इसके अंतर्गत कि, जो, अर्थात् यानी, यदि आदि आते हैं ।
(a) कारणवाचकोजक : इस अव्यय से आरंभ होनेवाला वाक्य अपूर्ण का समर्थन करता है । इसके अंतर्गत क्योंकि जो कि, इसलिए कि आदि आते हैं ।
(b) उद्देश्यवाचक : इस अव्यय के बाद आनेवाला वाक्य दूसरे वाक्य का उद्देश्य सूचित करता है । इसमें कि, जो, ताकि, इसलिए कि का प्रयोग आते हैं ।
(c) संकेतवाचक : इस अव्यय के कारण पूर्व वाक्य में जिस घटना का वर्णन रहता है, उससे उत्तरवाक्य की घटना का संकेत पाया जाता है । इसके अंतर्गत कि यदि–तो, जो, तो, चाहे, परन्तु, यद्यपि–तथापि, या, तो भी आदि आते हैं ।
नोट : जो अव्यय दो–दो करके एक साथ आते हैं, वे नित्य संबंधी कहलाते हैं ।
जैसे– यद्यपि–तथापि, जो–तो इत्यादि ।
यद्यपि मैं वहां नहीं था तथापि पूरी घटना बता सकता हूँ ।
4.विस्मयादिबोधक
''जिन अव्यय शब्दों से वक्या या लेखक के मनोवेग अर्थात् भय, विस्मय, शोक, घृणा, उद्वेग आदि प्रकट हों ।'' जैसे–
काश ! वह मुझे याद करता तो जिंदगी सँवर जाती ।
इस वाक्य में 'काश' विस्मयादिबोधक (Interjection) अव्यय है ।
विस्मयादिबोधक अव्यय के निम्नलिखित प्रकार हैं :
आश्चर्यबोधक : क्या ! सच ! ऐं ! ओ हो !....
हर्षबोधक : शाबाश ! धन्य ! अहा ! वाह ! ....
शोकबोधक : हाय ! उफ ! बाप रे,.....
इच्छाबोधक : जय हो ! आशिष ! .....
घृणाबोधक : छिः ! धिक् ! राम–राम ! हुश् ।...
अनुमोदनसूचक : ठीक ! वाह ! अच्छा भला !.....
संबोधनसूचक : अरे ! अरी ! ऐ !.....
नोट :
(i) विस्मयादिबोधक अव्यय के बाद विस्मयसूचक चिह्न (!) का प्रयोग किया जाता है ।

(ii) धत् तेरे की, हैलो, बहुत खूब, क्या कहने, कौन, क्यों, कैसा, सावधान, हट बचाओ, जा-जा आदि का प्रयोग भी विस्मयादिबोधक के रूप में होता है ।

नियात

''नियात (Particles) उन सहायक पदों को कहा जाता है, जो वाक्यार्थ में बिल्कुल नदीन अर्थ लाते है । ''

हिन्दी में क्या, काश, तो भी, ही, तक, लगभग ठीक, करीब, मात्र, सिर्फ, हाँ, न, नहीं मत इत्यादि निपातों का प्रयोग होता है ।

नीचे लिखे वाक्यों के चमत्कारों को देखें, जो निपात के कारण आए हैं-

मैं यह काम कर सकता हूँ । (सामान्य अर्थ)

मैं भी यह काम कर सकता हूँ । (और भी कर सकते है)

मैं ही यह काम कर सकता हूँ ।(सिर्फ मैं ही कर सकता हूँ)

मैं यह काम नहीं कर सकता हूँ । (नहीं कर सकता)

नियात से आश्चर्य प्रकट होता है; प्रश्न किया जाता है; निषेध किया जाता है और बल दिया जाता है ।

निपात के मुख्यतया नौ प्रकार माने जाते हैं :

1. स्वीकारार्थक - हाँ, जी, जी हाँ.....
2. नकारात्मक - नहीं, न, जी नहीं, ...
3. निषेधार्थक - मत.....
4. प्रश्नबोधक - क्या, न,.....
5. विस्मयार्थक - काश, क्या,.....
6. बलदायक - तो, ही, भी, तक .....
7. तुलनार्थक - सा,.....
8. अवधारणार्थक - ठीक, लगभग, करीब, तकरीबनकृ
9. आदरसूचक - जी,.....

तत्सम - तद्भव

शब्दों को अलग-अलग रूपों में रखा जा रहा है-

1. विकास या उद्गम की दृष्टि से शब्द-भेद

इस दृष्टि से शब्दों को चार वर्गो में रखा गया है-

(क) तत्सम शब्द : वैसे शब्द, जो संस्कृत और हिंदी दोनों भाषाओं में समान रूप से प्रचलित हैं । अंतर केवल इतना है कि संस्कृत भाषा में वे अपने विभक्ति-चिह्नों या प्रत्ययों से युक्त होते है और हिंदी में वे उनसे रहित । जैसे-

संस्कृत में कर्पूर : पर्यङ्कः फलम् ज्येष्ठ :

हिंदी में कर्पूर पर्यंक फल ज्येष्ठ

(ख) तद्भव शब्द : (उससे भव या उत्पन्न) वैसे शब्द, जो तत्सम से विकास करके बने है और कई रूपों में वे उनके (तत्सम के) समान नजर आते हैं । जैसे-

कर्पूर > कपूर

पर्यङ्क > पलंग

अग्नि > आग आदि ।

नोट : नीचे तत्सम-तद्भव शब्दों की सूची दी जा रही है । इन्हें देखे और समझने की कोशिश करें कि इनमें समानता-असमानता क्या है ?

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अश्रु	आँसू	इक्षु	ईख
कर्पूर	कपूर	गोधूम	गेहूँ
घोटक	घोडा	आम्र	आम
उलूक	उल्लूक	काष्ठ	काठ
ग्राम	गाँव	घृणा	घिन
अग्नि	आग	उष्ट्र	ऊँट
कोकिल	कोयल	गर्दभ	गदहा
चर्मकार	चमार	अंध	अंधा
कर्ण	कान	क्षेत्र	खेत
गंभीर	गहरा	चन्द्र	चाँद
ज्येष्ठ	जेठ	धान्य	धान
पत्र	पत्ता	पौष	पूस
भल्लूक	भालू	बट	श्वशुर
श्रेष्ठी	सेठ	सुभाग	सुहाग
सूची	सुई	हास्य	हँसी
कर्म	काम	कूप	कुँआ
स्नेह	नेह	कातर	कायर
लोक	लोग	शिक्षा	सीख
कुठार	कुल्हाडा	पक्व	पक्का
शाक	साग	इष्टिका	ईंट
गणना	गिनती	काक	काग

स्वश्रू	सास	भिति	भीत
विष्ठा	बीठ	शर्करा	शक्कर
कज्जल	काजल	अद्य	आज
दुर्बल	दुबला	उन्मना	अनमना
चित्रक	चीता	कुंभकार	कुम्हार
भिक्षा	भीख	कोटि	करोड
गात्र	गात	होंठ	ओष्ठ
अगम्य	अगम	मालिनी	मलिन
ताम्र	ताँबा	नव्य	नया
प्रस्तर	पत्थर	पौत्र	पोता
मृत्यु	मौत	शया	सेज
शृंगाल	सियार	स्तन	थन
स्वामी	साईं	मस्तक	माथा
चंचु	चोंच	हरिद्रा	हल्दी
प्रिय	पिया	अपूप	पुआ
कारवेल	करेला	शृंखला	सौंकल
मृतिका	मिट्टी	चतुष्पादिका	चौकी
पर्यंक	पलंग	अर्द्धतृतीय	ढाई
कूट	कूडा	शुष्क	सूखा
खर्पर	खपरा	क्षीर	खीर
चणक	चना	घट	घडा
पक्ष	पंख	काया	काय
अंगुष्ट	अँगूठा	सप्त	सात
अक्षत	अच्छत	भाग्नेय	भांजा
भ्रातृ	भाई	यजमान	जजमान
कुष्ठ	कोढ	धैर्य	धीरज
धूम्र	धुआँ	प्रतिच्छाया	परछाई
श्रावण	सावन	तैल	तेल
निद्रा	नींद	पीत	पीला
बधिर	बहरा	मित्र	मीत
शत	सौ	शिर	सिर
स्वर्णकार	सुनार	सूर्य	सूरज
हस्त	हाथ	अम्बा	अम्मा
कार्य	काज	जिह्वा	जीभ
आश्रय	आसरा	चूर्ण	चूना
सायम्	साँझ	त्वरित	तुरंत
चटका	चिडिया	सत्य	सच
सपत्नी	सौत	कपाट	किवाड
अष्ट	आठ	लक्ष	लाख
श्यामल	साँवला	लाक्षा	लाख
धारित्री	धरती	अक्षर	आखर
वायु	बयार	उच्च	ऊँचा
अवतार	औतार	कुक्कुर	कुकुर
याचक	जाचक	दधि	दही
उपवास	उपास	ग्राहक	ग्राहक
निर्वाह	निवाह	अट्टालिका	अटारी
आदित्यवार	एतवार	कुक्षि	कोख
दंत	दाँत	पद	पैर

पृष्ठ	पीठ	वानर	बन्दर
मुख	मुँह	श्वास	साँस
दश	दस	स्वर्ण	सोना
गौरी	गोरी	हस्ती	हाथी
तिक्त	तीता	चतुर्दश	चौदह
मयूर	मोर	केतक	केवडा
सर्षप	सरसों	स्वप्न	सपना
हास	हँसी	उद्धर्तन	उबटन
वचन	बैन	परशु	फरसा
सर्प	साँप	शलाका	सलाई
रात्रि	रात	वत्स	बच्चा
क्षुर	छूरा	दुग्ध	दूध
पूर्णिमा	पूनम	सर्व	सब
मौक्तिक	मोती	आशिष	आसीस
चक्रवाक	चकवा	श्वसुरालय	ससुराल
घृत	घी	कंकण	कंगन
गिद्ध	गीध	भक्त	भगत
कांचन	कंचन	गर्भिणी	गाभिन
यशोदा	जसोदा	चरित्र	चरित
अभीर	अहीर	फाल्गुन	फागुन
श्याली	साली	योद्धा	जोधा
पक्षी	पंछी	अंजलि	अँजुरी
दंतधावन	दातौन	जव	जौ
छिद्र	छेद	शृंगार	सिंगार
यश	जस	जामाता	जमाई
रात्रि	रात		

शब्द युग्म

कुछ ऐसे शब्द जो उच्चारण एवं लेखन में काफी समानता लिये हुये होते हैं । किन्तु थोड़ी सी भिन्नता से उनके अर्थ नितान्त अलग – अलग होते हैं । शब्द युग्म कहलाते हैं ।

जैसेः– अंत और अंत्य

अंत का अर्थ समाप्ति और अंत्य का अर्थ नीचे का

अमल और अम्ल

अमल का अर्थ स्वच्छ और अम्ल का अर्थ खटास

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अंस	कंधा	अंश	हिस्सा
अँगना	घर का आँगन	अंगना	स्त्री
अन्न	अनाज	अन्य	दूसरा
अनिल	हवा	अनल	आग
अम्बु	जल	अम्ब	माता, आम
अथक	बिना थके हुए	अकथ	जो कहा न जाय
अध्ययन	पढ़ना	अध्यापन	पढ़ाना
अधम	नीच	अधर्म	पाप
अली	सखी	अलि	भौंरा
अन्त	समाप्ति	अन्त्य	नीच, अन्तिम
अम्बुज	कमल	अम्बुधि	सागर
असन	भोजन	आसन	बैठने की वस्तु
अणु	कण	अनु	एक उपसर्ग, पीछे
अभिराम	सुन्दर	अविराम	लगातार, निरन्तर
अपेक्षा	इच्छा, आवश्यकता, तुलना में	उपेक्षा	निरादर
अवलम्ब	सहारा	अविलम्ब	शीघ्र
अतुल	जिसकी तुलना न हो सके	अतल	तलहीन
अचर	न चलनेवाला	अनुचर	दास, नौकर
अशक्त	असमर्थ, शक्तिहीन	असक्त	विरक्त
अगम	दुर्लभ, अगम्य	आगम	प्राप्ति, शास्त्र
अभय	निर्भय	उभय	दोनों
अब्ज	कमल	अब्द	बादल, वर्ष
अरि	शत्रु	अरी	सम्बोधन (स्त्री के लिए)
अभिज्ञ	जाननेवाला	अनभिज्ञ	अनजान
अक्ष	धुरी	यक्ष	एक देवयोनि
अवधि	काल, समय	अवधी	अवध देश की भाषा
अभिहित	कहा हुआ	अविहित	अनुचित
अयश	अपकीर्त्ति	अयस	लोहा
असित	काला	अशित	भोथा
आकर	खान	आकार	रूप
आस्तिक	ईश्वरवादी	आस्तीक	एक मुनि
आर्ति	दुःख	आर्त्त	चीख

अन्यान्य	दूसरा-दूसरा	अन्योन्य	परस्पर
अभ्याश	पास	अभ्यास	रियाज/आदत
आवास	रहने का स्थान	आभास	झलक, संकेत
आकर	खान	आकार	रूप, सूरत
आदि	आरम्भ, इत्यादि	आदी	अभ्यस्त, अदरक
आरति	विरक्ति, दुःख	आरती	धूप-दीप दिखाना
आभरण	गहना	आमरण	मरण तक
आयत	समकोण चतुर्भुज	आयात	बाहर से आना
आर्त	दुःखी	आर्द्र	गीला
इत्र	सुगंध	इतर	दूसरा
इति	समाप्ति	ईति	फसल की बाधा
इन्दु	चन्द्रमा	इन्दुर	चूहा
इड़ा	पृथ्वी/नाड़ी	ईड़ा	स्तुति
उपकार	भलाई	अपकार	बुराई
उद्धत	उद्दण्ड	उद्दत	तैयार
उपरक्त	भोग विलास में लीन	उपरत	विरक्त
उपाधि	पद/ख़िताब	उपाधी	उपद्रव
उपयुक्त	ठीक	उपर्युक्त	ऊपर कहा हुआ
ऋत	सत्य	ऋतु	मौसम
एतवार	रविवार	ऐतवार	विश्वास
कुल	वंश, सब	कूल	किनारा
कंगाल	भिखारी	कंकाल	ठठरी
कर्म	काम	क्रम	सिलसिला
कृपण	कंजूस	कृपाण	कटार
कर	हाथ	कारा	जेल
कपि	बंदर	कपी	घिरनी
किला	गढ़	कीला	खूँटा, गड़ा हुआ
कृति	रचना	कृती	निपुण, पुण्यात्मा
कृत्ति	मृगचर्म	कीर्ति	यश
कृत	किया हुआ	क्रीत	खरीदा हुआ
क्रान्ति	उलटफेर	क्लान्ति	थकावट
कान्ति	चमक, चाँदनी		
कली	अधखिला फूल	कलि	कलियुग
करण	एक कारक, इन्द्रियाँ	कर्ण	कान, एक नाम
कुण्डल	कान का एक आभूषण	कुन्तल	सिर के बाल
कपीश	हनुमान, सुग्रीव	कपिश	मटमैला
कूट	पहाड़ की चोटी, दफ्ती	कुट	किला, घर
करकट	कूड़ा	कर्कट	केंकड़ा
कटिबद्ध	तैयार, कमर बाँधे	कटिबन्ध	कमरबन्द, करधनी
कृशानु	आग	कृषाण	किसान
कटीली	तीक्ष्ण, धारदार	कँटीली	काँटेदार
कोष	खजाना	कोश	शब्द-संग्रह (डिक्शनरी)
कदन	हिंसा	कदन्न	खराब अन्न
कुच	स्तन	कूच	प्रस्थान
काश	शायद/एक घास	कास	खाँसी
कलिल	मिश्रित	क़लील	थोड़ा
कीश	बन्दर	कीस	गर्भ का थैला

कुटी	झोपड़ी	कूटी	दुती, जालसाज
कोर	किनारा	कौर	ग्रास
खड़ा	बैठा का विलोम	खरा	शुद्ध
खादि	खाद्य, कवच	खादी	ख़द्दर, कटीला
कांत	पति/चन्द्रमा	कांति	चमक
करीश	गजराज	करीष	सूखा गोबर
कृत्तिका	एक नक्षत्र	कृत्यका	भयंकर कार्य करनेवाली देवी
कुजन	बुरा आदमी	कूजन	कलरव
कुनबा	परिवार	कुनवा	खरीदनेवाला
कोड़ा	चाबुक	कोरा	नया
केशर	कुंकुम	केसर	सिंह की गर्दन के बाल
खोआ	दूध का बना ठोस पदार्थ	खोया	भूल गया, खो गया
खल	दुष्ट	खलु	ही तो, निश्चय ही
गण	समूह	गण्य	गिनने योग्य
गुड़	शक्कर	गुड़	गम्भीर
ग्रह	सूर्य, चन्द्र आदि	गृह	घर
गिरी	गिरना	गिरि	पर्वत
गज	हाथी	गज	मापक
गिरीश	हिमालय	गिरिश	शिव
ग्रंथ	पुस्तक	ग्रंथि	गाँठ
चिर	पुराना	चीर	कपड़ा
चिता	लाश जलाने के लिए लकड़ियों का ढेर	चीता	बाघ की एक जाति
चूर	कण, चूर्ण	चूड़	चोटी, सिर
चतुष्पद	चौपाया, जानवर	चतुष्पथ	चौराहा
चार	चार संख्या, जासूस	चारु	सुन्दर
चर	नौकर, दूत, जासूस		
चूत	आम का पेड़	च्युत	गिरा हुआ, पतित
चक्रवात	बवण्डर	चक्रवाक	चकवा पक्षी
चाष	नीलकंठ	चास	खेत की जुताई
चरि	पशु	चरी	चरागाह
चसक	चस्का/लत	चषक	प्याला
चुकना	समाप्त होना	चूकना	समय पर न करना
जिला	मंडल	जीला	चमक
जवान	युवा	जव	वेग/जौ
छत्र	छाता	क्षत्र	क्षत्रिय
छात्र	विद्यार्थी	क्षात्र	क्षत्रिय-संबंधी
छिपना	अप्रकट होना	छीपना	मछली फँसाकर निकालना
जलज	कमल	जलद	बादल
जघन्य	गर्हित, शूद्र	जघन	नितम्ब
जगत	कुएँ का चौतरा	जगत्	संसार
जानु	घुटना	जानू	जाँघ
जूति	वेग	जूती	छोटा जूता
जाया	व्यर्थ	जाया	पत्नी
जोश	आवेश	जोष	आराम
झल	जलन/आँच	झल्ल	सनक
टुक	थोड़ा	टूक	टुकड़ा
टोटा	घाटा	टोंटा	बन्दूक का कारतूस

डीठ	दृष्टि	ढीठ	निडर
डोर	सूत	ढोर	मवेशी
तड़ाक	जल्दी	तड़ाग	तालाब
तरणि	सूर्य	तरणी	नाव
तरुणी	युवती		
तक्र	मटठा	तर्क	बहस
तरी	गीलापन	तरि	नाव
तरंग	लहर	तुरंग	घोड़ा
तनी	थोड़ा	तनि	बंधन
तब	उसके बाद	तव	तुम्हारा
तुला	तराजू	तूला	कपास
तप्त	गर्म	तृप्त	संतुष्ट
तार	धातु तंतु/टेलिग्राम	ताड़	एक पेड़
तोश	हिंसा	तोष	संतोष
दूत	सन्देशवाहक	द्यूत	जुआ
दारु	लकड़ी	दारू	शराब
द्विप	हाथी	द्वीप	टापू
दमन	दबाना	दामन	आँचल, छोर
दाँत	दशन	दात	दान, दाता
दशन	दाँत	दंशन	दाँत से काटना
दिवा	दिन	दीवा	दीया, दीपक
दंश	डंक, काट	दश	दश अंक
दार	पत्नी, भार्या	द्वार	दरवाजा
दिन	दिवस	दीन	गरीब
दायी	देनेवाला, जबाबदेह	दाई	नौकरानी
देव	देवता	दैव	भाग्य
द्रव	रस, पिघला हुआ	द्रव्य	पदार्थ
दरद्	पर्वत/किनारा	दरद	पीड़ा/दर्द
दीवा	दीपक	दिवा	दिन
दौर	चक्कर	दौड़	दौड़ना
दाई	धात्री/दासी	दायी	देनेवाला
धत	लत	धत्	दुत्कारना
दह	कुंड/तालाब	दाह	शोक/ज्वाला
धराधर	शेषनाग	धड़ाधड़	जल्दी से
धारि	झुण्ड	धारी	धारण करनेवाला
धूरा	धूल	धुरा	अक्ष
निहत	मरा हुआ	निहित	छिपा हुआ, संलग्न
नियत	निश्चित	नीयत	मंशा, इरादा
निश्छल	छलरहित	निश्चल	अटल
नान्दी	मंगलाचरण (नाटक का)	नंदी	शिव का बैल
निमित्त	हेतु	नमित	झुका हुआ
नीरज	कमल	नीरद	बादल
निर्झर	झरना	निर्जर	देवता
निशाकर	चन्द्रमा	निशाचर	राक्षस
नाई	तरह, समान	नाई	हजाम
नीड़	घोंसला, खोंता	नीर	पानी
नगर	शहर	नागर	चतुर व्यक्ति, शहरी

नशा	बेहोशी, मद	निशा	रात
नारी	स्त्री	नाड़ी	नब्ज
निसान	झंडा	निशान	चिह्न
निवृत्ति	लौटना	निवृति	मुक्ति/शांति
नित	प्रतिदिन	नीत	लाया हुआ
नियुत	लाख दस लाख	नियुक्त	बहाल किया गया
निहार	देखकर	नीहार	ओस-कण
नन्दी	शिव का बैल	नान्दी	मंगलाचरण
निर्विवाद	विवाद-रहित	निर्वाद	निन्दा
निष्कृष्ट	सारांश	निकृष्ट	निम्न स्तरीय
नीवार	जंगली धान	निवार	रोकना
नेती	मथानी की रस्सी	नेति	अनन्त
नमित	झुका हुआ	निमित्त	हेतु
परुष	कठोर	पुरुष	मर्द, नर
प्रदीप	दीपक	प्रतीप	उलटा, विशेष, काव्यालंकार
प्रसाद	कृपा, भोग	प्रासाद	महल
प्रणय	प्रेम	परिणय	विवाह
प्रबल	शक्तिशाली	प्रवर	श्रेष्ठ, गोत्र
परिणाम	नतीजा, फल	परिमाण	मात्रा
पास	नजदीक	पाश	बन्धन
पीक	पान आदि का थूक	पिक	कोयल
प्राकार	घेरा, चहारदीवारी	प्रकार	किस्म, तरह
परिताप	दुःख, सन्ताप	प्रताप	ऐश्वर्य, पराक्रम
पति	स्वामी	पत	सम्मान, सतीत्व
पांशु	धूलि, बाल	पशु	जानवर
परीक्षा	इम्तहान	परिक्षा	कीचड़
प्रतिषेध	निषेध, मनाही	प्रतिशोध	बदला
पूर	बाढ़, आधिक्य	पुर	नगर
पार्श्व	बगल	पाश	बन्धन
प्रहर	पहर (समय)	प्रहार	चोट, आघात
परवाह	चिन्ता	प्रवाह	बहाव (नदी का)
पट्ट	तख्ता, उल्टा	पट	कपड़ा
पानी	जल	पाणि	हाथ
प्रणाम	नमस्कार	प्रमाण	सबूत, नाप
पवन	हवा	पावन	पवित्र
पथ	रास्ता	पथ्य	आहार (रोगी के लिए)
पौत्र	पोता	पोत	जहाज
प्रण	प्रतिज्ञा	प्राण	जान
पन	संकल्प	पन्न	पड़ा हुआ
पर्यन्त	तक	पर्यंक	पलंग
पराग	पुष्पराज	पारग	पूरा जानकार
प्रकोट	परकोंटा	प्रकोष्ठ	कोठरी
परभृत्	कौआ	परभृत	कोयल
परिषद्	सभा	पार्षद	परिषद् के सदस्य
प्रदेश	प्रान्त	प्रद्वेष	शत्रुता
प्रस्तर	पत्थर	प्रस्तार	फैलाव
प्रवृद्ध	परा बढ़ा हुआ	प्रबुद्ध	सचेत/बुद्धिमान्

पत्ति	पैदल सिपाही	पत्ती	पत्ता
परमित	चरमसीमा	परिमित	मान/मर्यादा/तौल
प्रकृत	यथार्थ	प्राकृत	स्वाभाविक एक भाषा
प्रवाल	मूँगा	प्रवार	वस्त्र
फुट	अकेला, इकहरा	फूट	खरबूजा-जाति का फल
फण	साँप का फण	फन	कला, कारीगर
बलि	बलिदान	बली	वीर
बास	महक, गन्ध	वास	निवास
बहन	बहिन	वहन	ढोना
बल	ताकत	वल	मेघ
बन्दी	कैदी	वन्दी	भाट, चारण
बात	वचन	वात	हवा
बुरा	खराब	बूरा	शक्कर
बन	बनना, मजदूरी	वन	जंगल
बहु	बहुत	बहू	पुत्रवधू, ब्याही स्त्री
बार	दफा	वार	चोट, दिन
बान	आदत, चमक	बाण	तीर
व्रण	घाव	वर्ण	रंग, अक्षर
ब्राह्य	बाहरी	वाह्य	वहन के योग्य
बगुला	एक पक्षी	बगूला	बवंडर
बदन	शरीर	वदन	मुख/चेहरा
बाजु	बिना	बाजू	बाँह
बिना	अभाव	बीना	एक बाजा
बसन	कपड़ा	व्यसन	लत/बुरी आदत
बाई	वेश्या	बायीं	बायाँ का स्त्री रूप
बाला	लड़की	वाला	एक प्रत्यय
भंगि	लहर, टेढ़ापन	भंगी	मेहतर, भंग करनेवाला
भिड़	बरें	भीड़	जनसमूह
भित्ति	दीवार, आधार	भीत	डरा हुआ
भवन	महल	भुवन	संसार
भारतीय	भारत का	भारती	सरस्वती
भोर	सबेरा	विभोर	मग्न
मनुज	मनुष्य	मनोज	कामदेव
मल	गन्दगी	मल्ल	पहलवान, योद्धा
मेघ	बादल	मेध	यज्ञ
मांस	गोश्त	मास	महीना
मूल	जड़	मूल्य	कीमत
मद	आनंद	मद्य	शराब
मणि	एक रत्न	मणी	साँप
मरीचि	किरण	मरीची	सूर्य, चन्द्र
मनुजात	मानव-उत्पन्न	मनुजाद	मानव-भक्षी
मौलि	चोटी/मस्तक	मौली	जिसके सिर पर मुकुट हो
मत	नहीं	मत्त	मस्त/धुत्त
रंक	गरीब	रंग	वर्ण
रग	नस	राग	लय
रत	लीन	रति	कामदेव की पत्नी, प्रेम
रोचक	रुचनेवाला	रेचक	दस्तावर

रद	दाँत	रद्द	खराब
राज	राजा/प्रान्त	राज	रहस्य
रार	झगड़ा	राँड़	विधवा
राइ	सरदार	राई	एक तिलहन
रोशन	प्रकट/प्रदीप्त	रोषण	कसौटी/पारा
लवण	नमक	लवन	खेती की कटाई
लुटना	लूटा जाना, बरबाद होना	लूटना	लूट लेना
लक्ष्य	उद्देश्य	लक्ष	लाख
लाश	शव	लास्य	प्रेमभाव सूचक
वित्त	धन	वृत्त	गोलाकार, छन्द
वाद	तर्क, विचार	वाद्य	बाजा
वस्तु	चीज	वास्तु	मकान, इमारत
व्यंग	विकलांग	व्यंग्य	ताना, उपालम्भ
वसन	कपड़ा	व्यसन	बुरी आदत
वासना	कामना	बासना	सुगंधित करना
व्यंग	विकलांग	व्यंग्य	कटाक्ष/ताना
वरद	वर देनेवाला	विरद	यश
विधायक	रचनेवाला	विधेयक	विधान/कानून
विभात	प्रभात	विभाति	शोभा/सुन्दरता
विराट्	बहुत बड़ा	विराट	मत्स्य जनपद/एक छंद
विस्मृत	भूला हुआ	विस्मित	आश्चर्य में पड़ा
बिपिन	जंगल	विपन्न	विपत्तिग्रस्त
विभीत	डरा हुआ	विभीति	डर
विस्तर	विस्तृत	बिस्तर	बिछावन
वरण	चुनना	वरन्	बल्कि
शुल्क	फीस, टैक्स	शुक्ल	उजला
शूर	वीर	सुर	देवता, लय
शम	संयम, इन्द्रियनिग्रह	सम	समान
शर्व	शिव	सर्व	सब
शप्त	शाप पाया हुआ	सप्त	सात
शहर	नगर	सहर	सबेरा
शाला	घर, मकान	साला	पति का भाई
शीशा	काँच	सीसा	एक धातु
श्याम	श्रीकृष्ण, काला	स्याम	एशिया का एक देश
शती	सैकड़ा	सती	पतिव्रता स्त्री
शय्या	बिछावन	सज्जा	सजावट
शान	इज्जत, तड़क-भड़क	शाण	धार तेज करने का पत्थर
शराव	मिट्टी का प्याला	शराब	मदिरा
शब	रात	शव	लाश
शूक	जौ	शुक	सुग्गा
शिखर	चोटी	शेखर	सिर
शास्त्र	सैद्धान्तिक विषय	शस्त्र	हथियार
शर	बाण	सर	तालाब/महाशय
शकल	टुकड़ा	शक्ल	चेहरा
शकृत	मल	सकृत	एकबार
शर्म	लाज	श्रम	मेहनत
शान्त	शन्तियुक्त	सान्त	अन्तवाला

शप्ति	शाप	सप्ति	घोड़ा
श्व	कुत्ता	स्व	अपना
शास	अनुशासन/स्तुति	सास	पति/पत्नी की माँ
शंकर	शिव	संकर	दोगला/मिश्रित
शारदा	सरस्वती	सारदा	सार देनेवाली
शवल	चितकबरा	सबल	बलवान्
श्वजन	कुत्ता	स्वजन	अपने लोग
शशधर	चाँद	शशिधर	शिव
शिवा	पार्वती/गीदड़ी	सिबा	अलावा
शकट	बैलगाड़ी	शकठ	मचान
श्वपच	चाण्डाल	स्वपच	स्वयं भोजन बनानेवाला
शाली	एक प्रकार का धान	साली	पत्नी की बहन
शित	तेज किया गया	शीत	ठंडा
शुक्ति	सीप	सूक्ति	अच्छी उक्ति
शूकर	सूअर	सुकर	सहज
सर	तालाब	शर	तीर
सूर	अंधा, सूर्य	शूर	वीर
सूत	धागा	सुत	बेटा
सन्	साल	सन	पटुआ
समान	तरह, बराबर	सामान	सामग्री
स्वर	आवाज	स्वर्ण	सोना
संकर	मिश्रित, दोगला, एक काव्यालंकार	शंकर	महादेव
सूचि	शूची	सूची	विषयक्रम
सुमन	फूल	सुअन	पुत्र
स्वर्ग	तीसरा लोक	सर्ग	अध्याय
सुखी	आनन्दित	सखी	सहेली
सागर	शराब का प्याला	सागर	समुद्र
सुधी	विद्वान, बुद्धिमान	सुधि	स्मरण
सिता	चीनी	सीता	जानकी
साप	शाप का अपभ्रंश	साँप	एक विषैला जन्तु
सास	पति या पत्नी की माँ	साँस	नाक या मुँह से हवा लेना
श्वेत	उजला	स्वेद	पसीना
संग	साथ	संघ	समिति
सन्देह	शक	सदेह	देह के साथ
स्वक्ष	सुन्दर आँख	स्वच्छ	साफ
श्वजन	कुत्ते	स्वजन	अपना आदमी
शूकर	सूअर	सुकर	सहज
सखी	सहेली	साखी	साक्षी
सत्र	वर्ष	शत्रु	दुश्मन
स्याम	एक देश	श्याम	कृष्ण/काला
सीकर	जलकण	सीकड़	जंजीर
सँवार	सजाना	संवार	आच्छादन
सपत्नी	सौत	सपत्नीक	पत्नी सहित
सवा	चौथाई	सबा	सुबह की हवा
सास्त्र	अस्त्र के साथ	सास्र	आँसू के साथ
समवेदना	साथ-साथ दुखी होना	संवेदना	अनुभूति
समबल	तुल्य बलवाला	सम्बल	पाथेय

सिर	मस्तक	सीर	हल
स्वेद	पसीना	श्वेत	उजला
सेव	बेसन का पकवान	सेब	एक फल
संतति	संतान	सतत	सदा
स्रवण	टपकना	श्रवण	सुनना/कान
सुकृति	पुण्य	सुकृति	पुण्यवान
संभावना	संदेह/आशा	समभावना	तुल्यता की भावना
सन्मति	अच्छी बुद्धि	संमति	परामर्श
हुंकार	ललकार, गर्जन	हुंकार	पुकार
हल्	शुद्ध व्यंजन	हल	खेत जोतने का औजार
हरि	विष्णु	हरी	हरे रंग की
हँसी	हँसना	हंसी	हंसनी
हुति	हवन	हूति	बुलावा
हूण	एक मंगल जाति	हुन	मोहर
हुक	पीठ का दर्द	हूक	ह्रदय की पीड़ा
हूठा	अँगूठा	हूँठा	साढ़े तीन का पहाड़ा
हाड़	हड्डी	हार	पराजय

Toppersnotes
Unleash the topper in you

वर्तनी शुद्धि

वर्तनी के संदर्भ में हमें कुछ तथ्यों पर ध्यान रखना अनिवार्य होता है –

(क) शब्द के शुद्ध लेखन में किन-किन लिपि चिह्नों का प्रयोग होना चाहिए।

(ब) शब्द में प्रयुक्त विभिन्न लिपि चिह्नों को अनुकूल क्रम में प्रयोग करना ।

हिन्दी वर्तनी के संदर्भ में निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करना अनिवार्य है ।

1. मात्रा संबंधी अशुद्धियाँ

आ> अ	अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
	अखांडनीय	अखंडनीय	अत्याधिक	अत्यधिक
	अनाधीकार	अनाधिकार	आजकाल	आजकल
	आपना	अपना	आधीन	अधीन
	आलौकिक	अलौकिक	दावात	दवात
	हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप		
आ< अ	अगामी	आगामी	अदान-प्रदान	आदान-प्रदान
	अहार	आहार	चहिए	चाहिए
	नराज	नाराज	परलौकिक	पारलौकिक
	परिवारिक	पारिवारिक	संसारीक	सांसारीक
ई > इ	ईधर	इधर	उत्पत्ती	उत्पत्ति
	उन्नती	उन्नति	उपलब्धी	उपलब्धि
	कवी	कवि	क्योंकी	क्योंकि
	नालीयाँ	नालियाँ	पूर्ती	पूर्ति
	प्राप्ती	प्राप्ति	मुनी	मुनि
	व्यक्ती	व्यक्ति	शक्ती	शक्ति
	साथीयों	साथियों	हानी	हानि
इ>ई	अद्वितिय	अद्वितीय	आशिर्वाद	आशीर्वाद
	केन्द्रिय	केन्द्रीय	दिक्षा	दीक्षा
	दिवाली	दीवाली	निरसता	नीरसता
	निरिह	निरीह	निरोग	नीरोग
	निरिक्षण	निरीक्षण	पत्नि	पत्नी
	परिक्षा	परीक्षा	पितांबर	पीतांबर
	पूजनिय	पूजनीय	बिमार	बीमार
	बिमारी	बीमारी	श्रीमति	श्रीमती
ऊ>उ	अनूकूल	अनुकूल	आयू	आयु
	कृपालू	कृपालु	गुरू	गुरू
	दयालू	दयालु	धूलाई	धुलाई
	पटू	पटु	परूश	परूष
	पशू	पशु	पुरूश	पुरूष
	प्रभू	प्रभु	मधू	मधु
	रूपया	रूपया	शिशू	शिशु
	शुरू	शुरू	साधू	साधु
उ >ऊ	उपर	ऊपर	दुर	दूर
	पुर्ण	पूर्ण	पुर्व	पूर्व
	पुज्य	पूज्य	मुली	मूली

	शुन्य	शून्य	सुप	सूप
	सुर्य	सुर्य	स्वरूप	स्वरूप

2. अकारण अनुनासिकता

रँण	रण	तँन	तन
खाँन	खान	पाँन	पान
तँम	तम	दाँम	दाम
राँम	राम		

3. अनुनासिकता (चंद्रबिन्दु)

आंख	आँख	ऊंचा	ऊँचा
कांच	काँच	गूंगा	गूँगा
चांद	चाँद	जहां	जहाँ
दांत	दाँत	बांस	बाँस
यहां	यहाँ	वहां	वहाँ
हां	हाँ		

4. अनुस्वार

अँक	अंक(अङ्क)	पँक	पंक(पङ्क)
रँक	रंक(रङ्क)	शँकर	शंकर(शङ्कर)
पँख	पंख(पङ्ख)	अँग	अंग(अङ्ग)
कँगन	कंगन(कङ्गन)	जँग	जंग(जङ्ग)
रँग	रंग(रङ्ग)	कँचन	कंचन(कण्चन)
मँजु	मंजुल(मण्जुल)	घँटी	घंटी(घण्टी)
पँडा	पंडा(पण्डा)	पँत	पंत(पन्त)
पँथ	पंथ(पन्थ)	चँदन	चंदन(चन्दन)
पँप	पंप(पम्प)	गँभीर	गंभीर(गम्भीर)
सँसार	संसार	हिन्सा	हिंसा

यदि नासिक्य व्यंजन के पूर्व समान अर्थात् वही नासिक व्यंजन अर्ध रूप में प्रयुक्त हो, तो उसके मूल रूप में ही लिखना होगा, उसका अनुस्वार रूप नहीं होता हैं, यथा–

भिंन	भिन्न	अंन	अन्न
संमान	सम्मान	संमिलित	सम्मिलित

2- ‘ण’ नासिक्य व्यंजन

डँ>ण	गँडेश	गणेश	रँडँभूमि	रणभूमि
	रँडँ	रण	गँडँना	गणना
	रामायँडँ	रामायण	आचरन	आचरण
	शरँडँ	शरण		
न>ण	आक्रमन	आक्रमण	आचरन	आरचरण
	किरन	किरण	गनित	गणित
	गुन	गुण	तृन	तृण
	निरीक्षन	निरीक्षण	प्रान	प्राण
	रनभूमि	रणभूमि	रामायन	रामायण
	शरन	शरण	स्मरन	स्मरण

6. 'र' प्रयोग

अरथ	अर्थ	आर्शीवाद	आशीर्वाद
आर्दश	आदर्श	करम	कर्म
धरम	धर्म	मरयादा	मर्यादा
वर्कस	वर्क्स	वर्स्त्य	वर्त्स्य
कार्यकर्म	कार्यक्रम	चन्दर	चन्द्र
तीवर	तीव्र	परसन्न	प्रसन्न
परसाद	प्रसाद	परतिज्ञा	प्रतिज्ञा
समुन्दर	समुद्र	सहसत्र	सहस्त्र
सत्रोत	स्त्रोत	टरक	ट्रक
टराम	ट्राम	डरम	ड्रम

7. 'ब > व'

पूर्ब	पूर्व	बन	वन
बनस्पति	वनस्पति	बर्शा	वर्षा
बाणी	वाणी	बिशारद	विशारद
बिलास	विलास	बैदेही	वैदेही

8. श, श, स प्रयोग

स > श

असोक	अशोक	आदर्स	आदर्श
आसा	आशा	देसी	देशी
प्रसंसा	प्रशंसा	विस्वास	विश्वास
संकर	शंकर	परस्चात	पश्चात

'श स > ष'

कस्ट	कष्ट	अभीस्ट	अभीष्ट
घनिस्ट	घनिष्ट	रास्ट्र	राष्ट्र
भविस्य	भविष्य	संतुश्ट	संतुष्ट

'श > स'

नमश्कार	नमस्कार	प्रशाद	प्रसाद
शंकट	संकट	शाशन	शासन
शुशोभित	सुशोभित	हंश	हंस

9. 'ऋ > र' प्रयोग

उपगृह	उपग्रह	भृश्ट	भ्रष्ट
गृहण	ग्रहण	रिशि	ऋषि
रितु	ऋतु	रिण	ऋण
श्रंगार	शृंगार	ह्रदय	हृदय

10. 'ज्ञ – ग्य' प्रयोग

ग्यान	ज्ञान	आग्या	आज्ञा
ग्यापन	ज्ञापन	प्रतिग्या	प्रतिज्ञा
विग्यान	विज्ञान		
भाज्ञ	भाग्य		

11. 'छ – क्ष' प्रयोग

कछा	कक्षा	छमा	क्षमा
छुद्र	क्षुद्र	छेत्र	क्षेत्र
नछत्र	नक्षत्र	लछण	लक्षण
विपछ	विपक्ष		

12. 'ड – ड़' प्रयोग

रीड	रीड़	डमरू	डमरू
डगर	डगर	डाल	डाल
सडक	सड़क	पडाव	पड़ाव
पहाड	पहाड़	मोडना	मोड़ना

13. 'ढ – ढ़' प्रयोग

ढक्कन	ढक्कन	ढपली	ढपली
ढोल	ढोल	ढलान	ढलान
चढना	चढ़ना	टेढा	टेढ़ा
प्रौढ	प्रौढ़	बूढा	बूढ़ा

14. 'ड़ – ढ़' प्रयोग

काडना	काढ़ना	चडना	चढ़ना
गडना	गढ़ना	चिडना	चिढ़ना
खिढकी	खिड़की	फाढना	फाड़ना
सढना	सड़ना		

15. 'ट – ठ' प्रयोग

अभीष्ठ	अभीष्ट	विशिश्ठ	विशिष्ठ
अश्लिष्ठ	अश्लिष्ट	संतुश्ठ	संतुष्ठ
घनिष्ट	घनिष्ठ	श्रेश्ट	श्रेष्ट

16. अल्पप्राण–महाप्राण प्रयोग

गद्धा	गड्ढा	पथ्थर	पत्थर
बध्घी	बग्घी	मख्खन	मक्खन

17. श्रुतिमूलक प्रयोग (जहाँ पर 'स्वर' सुनाई दे वहाँ स्वर का ही प्रयोग करें)

अपनायी	अपनाई	आये	आए
खइये	खइए	गये	गए
जाइये	जाइए	नयी	नई
पुरवायी	पुरवाई	बाधायें	बाधाएँ
बलिकायें	बालिकाएँ	बुलायें	बुलाएँ
लिये	लिए	समस्यायें	समस्याएँ
सहनायी	शहनाई		